प्रश्न- अज्ञेय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी काव्यात्मक विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

छायावादोत्तर हिन्दी कविता में प्रयोगवादी धारा के प्रवर्त्तक के रूप में ख्यात और नई कविता के प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रतिष्ठित कवि अज्ञेय के प्रथम काव्य-संग्रह 'भग्नदूत' का प्रकाशन 1933 ई॰ में ही हो चुका था। यही नहीं 1942 ई॰ में उनके दूसरे संग्रह 'चिन्ता' का भी प्रकाशन हो चुका था, लेकिन उन्हे वास्तविक पहचान 1943 ई॰ में उनके द्वारा संपादित तारसप्तक की कविताओं से ही बनती दिखाई पड़ती है। तबसे लेकर 1980 ई॰ तक उनकी कविता-यात्रा का एक अबाध क्रम दृष्टिगोचर होता है।

चार सप्तकों और 'रूपांबरा'- जैसी प्रतिनिधि व समकालीन कविताओं के संकलन के अलावा उन्होंने प्रतीक और 'दिनमान' जैसी महत्वपूर्ण पत्रिकाओं का संपादन भी किया था। कथा और निबंध साहित्य में भी उन्होंने अपनी स्वतंत्र पहचान बनायी थी, लेकिन उनकी प्रतिभा का वास्तविक तथा अखंड प्रतिष्ठा कविता के द्वारा ही मिल पायी। आलोचकों ने तारसप्तक की भी नोटिश उसके प्रकाशन के अनेक वर्षो बाद ली थी और उसमें भी उन्हें बदनामी ही अधिक मिली थी, लेकिन आज उनके समग्र काव्य पर विचार करने पर प्रस्थान-बिन्दु के रूप में तारसप्तक की कविताओं को रखना पड़ता है।

'तारसप्तक' के पूर्व की उनकी कविताओं को छायावादी धारा ही अंग या उससे आक्रांति परक एक नए कवि की आरंभिक रचनाएँ माना जा सकता है पर तारसप्तक की कविताओं की आधुनिकता पूरी तरह स्पष्ट हो आयी थी जो उनकी परवर्ती कविताओं और नई कविता काव्यधारा में प्रमुखता के साथ परिलक्षित की गई। आलोचक डॉ॰ बच्चन सिंह का मत है कि "भग्नदूत में मुख्यत: गदहपचीसी का प्रणय-निवेदन है। मधु की मोहक छलना में उलझा हुआ कवि कहीं दया की भीख माँगता है तो कहीं करुणा की। कहीं प्रसाद के आँसू का प्रभाव है, तो कहीं निराला के गीतों का।" परन्तु 'तारसप्तक' की कविताओं में कवि ने इससे अलग एक सर्वथा नई तथा आधुनिकता चेतना की प्राप्ति कर ली है, जिसमें वह रोमानी भावनाओं तक शैली से पूर्णत: मुक्ति कर ली है। 'शिशिर की राका-निशा' कविता में कवि स्पष्ट कहा है-

"वंदना है चाँदनी सित
झूठ वह आकाश का निरवधि गहन विस्तार
शिशिर की राका-निशा की शांति है निस्सार।"

कवि सौंदर्य के पूरी अवधारणा तथा महत्ता से साफ इंकार करता हुआ-सा चित्रित करता है कि—

"निकटतर- धंसती हुई छत, आड़ में निर्वेद
मूत्र सिंचित मृत्तिका के वृत्त में

तीन टाँगों पर खड़ा नत- ग्रीव
धैर्य धन गदहा।"

अज्ञेय को व्यक्तिवादी कवि माना गया है। आत्मान्वेषण, व्यक्ति की खोज आदि की प्रवृत्तियों के चलते उनके काव्य में एक रहस्यात्मकता की भी स्थिति बनती है। विद्वानों का मत है कि उनकी इस अंत:यात्रा का वास्तविक आरंभ उनके संग्रह 'हरी घास पर क्षणभर' से होता है। उसके बाद 'बावरा अहेरी', 'आँगन के पार द्वार', 'पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ' और 'कितनी नावों में कितनी बार' जैसे महत्वपूर्ण काव्य संग्रहों के प्रकाश हुए जिनमें उनके काव्यात्मक विकास के विभिन्न दर्शन होते हैं। उन्होंने तारसप्तक में ही कहा था कि —

"नहीं कारण कि मेरे हृदय उथला या कि सूना है।
या कि मेरा प्यार मैला है।
बल्कि केवल यही —
ये उपमान मैले हो गये है।"

'हरी घास पर क्षण भर' में उनका कवि अपने उपर ही पूर्णत: केन्द्रित होता हुआ दिखाई देता है:

"कितनी शांति! कितनी शांति!
समाहित क्यों नहीं होती यहाँ भी मेरे हृदय की क्रांति?
क्यों नहीं अंतर्गुहा का अश्रृंखला दुर्बाध्य वासी
अधर यायावर, अचिर से चिर प्रवासी
नहीं रुकता चाहकर – स्वीकार कर – विश्रृंगति?"

इस वैयक्तिकता को लेकर अज्ञेय पर अनेक तरह के आरोपों की झड़ियाँ भी लगाई गई परन्तु वे अपने पथ पर अभ्रांत भाव से पूरे आत्मविश्वास के साथ अग्रसर होते रहे। 'आँगन के पार द्वार' को उनकी इस यात्रा की महत्वपूर्ण उपलब्धि कहा जा सकता है जिसकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण कविता 'असाध्य वीणा' को प्रियंवद उसकी आन्तरिकता को जाग्रत कर साधता है। प्रियंवद वीणा को साधने में लगा तो वह पूरी राज सभा को भूल गया था।

"मौन प्रियंवद साध रहा था वीणा-
नहीं स्वयं अपने को शोध रहा था।"

उनके अंतिम महत्वपूर्ण संग्रह 'कितनी नावों में कितनी बार' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिला था। इस संग्रह में भी वे व्यक्ति और क्षण में केन्द्रित या उसे पकड़ने, सार्थकता पाने की कोशिश में लगे दिखते हैं। उनका कथन है कि यदि श्रीकृष्ण ने भी किसी एक गोप से अभिप्रेत पा लिया होता तो दुबारा किसी को प्यार क्यों किया होता?" फिर स्पष्ट करते हैं कि:

"कवि ने गीत लिखे नये बार-बार
पर उसी एक विषय को देता रहा विस्तार
जिसे कभी पूरा पकड़ा पाया नहीं
किसी एक गीत में वह गया दिखता
तो कवि दूसरा गीत ही क्यों लिखता?

सचमुच 'हरी घास पर क्षण भर' से लेकर 'कितनी नावों में कितनी बार' तक कवि अज्ञेय वैयक्तिकता की, उसी एक सत्य या क्षण की, उसी एक सार्थकता की तलाश में बार-बार लेखनी उठाते दिखते है। शायद कविता का सत्य पूरी तरह प्राप्त होना किसी के लिए संभव नहीं हुआ है, परन्तु इतना तो सत्य है कि अज्ञेय के रूप में आधुनिक हिन्दी कविता का एक युगांतर व्यापी महत्व वाला कवि प्राप्त हुआ, जिसका काव्य बार-बार नई व्याख्या की मांग करता है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी० के० कालेज डुमराँव
बक्सर (बिहार)